MJC Sem II — 1

(1) Foundation of Social Psychology

Jai Ram Singh
Deptt of Psychology
Mahila College Daltonganj
Palamu

समाज मनोविज्ञान की विषय वस्तु
Subject Matter of Social Psychology

Social Psychology सामाजिक सम्बन्धों का मनोविज्ञान है। समाज मनोविज्ञान को कभी-कभी मनोवैज्ञानिक समाजशास्त्र के नाम से भी जाना जाता है। समाज मनोविज्ञान का विकास एक ओर तो सामान्य मनोविज्ञान के शाखा के रूप में हुआ और दूसरी ओर समाजशास्त्र के शाखा के रूप में विकसित हुआ है। सामान्य मनोविज्ञान व्यक्ति का अध्ययन करता है और समाजशास्त्र समाज का अध्ययन करता है।

अरस्तु ने बहुत पहले ही बतलाया था कि कोई भी व्यक्ति सिर्फ प्राणी-शारीरिक प्राणी ही नहीं होता बल्कि वह एक सामाजिक प्राणी भी होता है। उसे अपने सामाजिक शारीरिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक इत्यादि के विकास के लिए एवं उसके अस्तित्व को प्राप्त करने के लिए समाज पर ही निर्भर रहना पड़ता है।

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित अपने अनेकों आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है और इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसे अपने आस-पास के अनेक व्यक्तियों तथा समूहों से क्रियात्मक

सम्बन्ध स्थापित करना पड़ता है इन्हीं क्रियाओं सम्बन्धों के क्रम में सिर्फ आवश्यकताओं की पूर्ति ही नहीं होती बल्कि व्यक्ति के विचारों एवं व्यवहारों पर दूसरे व्यक्ति एवं समूहों के व्यवहारों तथा विचारों का प्रभाव पड़ता है। शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो इन विचारों एवं व्यवहारों से अपने आप को अलग रख पाता हो। अतः जो विज्ञान व्यक्ति के व्यवहारों पर सामाजिक परिस्थितियों के प्रभावों का विश्लेषण तथा अध्ययन करता है उसे समाज-मनोविज्ञान के नाम से जाना जाता है। क्योंकि यह व्यक्ति और समूह के बीच सामाजिक क्षेत्रों में होनेवाले अन्तःक्रियाओं और उसके परिणामों का अध्ययन करता है।

मैगडुगल ने यहाँ तक कहा है कि मस्तिष्क का विकास स्वयं एक सामाजिक प्रक्रिया है क्योंकि मस्तिष्क के विकास के प्रत्येक स्तर पर समाज और अन्य व्यक्तियों के बीच होने वाले अन्तःक्रियाओं का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। जहाँ एक व्यक्ति के मस्तिष्क के विकास में Social Power कार्य करती है, वहीं दूसरी और सामाजिक शक्तियाँ स्वयं ही व्यक्तियों के बीच होनेवाली अन्तःक्रियाओं का परिणाम होता है। यहाँ हम यह भी कह सकते हैं कि मानव व्यवहार मानसिक प्रक्रियाओं और सामाजिक

परिस्थितियों का परिणाम होता है और विज्ञान इस तथ्य को स्वीकार करता है और मानवीय व्यवहार तथा सामाजिक परिस्थितियों के सम्बन्धों का अध्ययन करता है उसे सामाजिक मनोविज्ञान की संज्ञा दी जाती है

Social Psychology का विकास एक स्वतंत्र शाखा के रूप में 1908 ई. में हुआ और इस समय से आज तक विद्वानों ने इसे भिन्न-भिन्न रूपों में परिभाषित किया है

किंबाल युंग ने मानवीय व्यवहार का अध्ययन किया और अपनी पुस्तक " A hand book of Social Psychology " में इसके अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा है कि समाज मनोविज्ञान व्यक्ति की पारस्परिक अन्तःक्रियाओं तथा इन अन्तःक्रियाओं का व्यक्ति विशेष के विचारों, भावनाओं संवेगों एवं आदतों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करता है।

An outline of Social Psychology ई. 1956 में SERIF Study of Social Studies ने शेरिफ ने के आधार पर कहा है कि " सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहारों एवं अनुभवों का सामाजिक उत्तेजक स्थिति के सम्बन्ध में वैज्ञानिक अध्ययन करता है

क्रेच, क्रचफील्ड एवं बैलेची ने 1962 में इसके अनुसार में कहा है कि "Social Psychology is the science of the behaviour of the Individual" - Fieldman (1985) ने अपनी पुस्तक Social Psychology में समाज मनोविज्ञान के सम्बन्ध में कहा है कि - समाज मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जिसमें किस तरह से किसी व्यक्ति के चिन्तन, भावनाएं एवं क्रियाएं दूसरे द्वारा प्रभावित होती है। इस बात का अध्ययन करता है। मैयर्स (1988) ने समाज मनोविज्ञान के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा है कि व्यक्ति किस तरह से दूसरे के बारे में सोचता है, दूसरों को कैसे प्रभावित करता है तथा दूसरों से किस तरह से जुड़ता है इसका वैज्ञानिक अध्ययन करता है।"

समाज मनोविज्ञान के स्वरूप के विद्वानों द्वारा दिये गये उपरोक्त विचारों के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि विद्वानों द्वारा दिए गये सभी विचारों में काफी समानता है और सभी ने समाज मनोविज्ञान के विषय वस्तु के रूप में व्यक्ति द्वारा सामाजिक परिस्थितियों में किए गये व्यवहारों को स्वीकार किया है।

समाज मनोविज्ञान मनुष्य के मानसिक प्रक्रियाओं की क्रियाशीलता एवं

सामाजिक परिस्थितियों में अन्य व्यक्तियों के साथ अन्तः क्रियात्मक सम्बन्धों के संदर्भ में व्यक्ति के सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन है। अतः समाज मनोविज्ञान का सामान्य परिभाषा देते हुए हम कह सकते हैं कि "समाज मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहार तथा अनुभूतियों का सामाजिक परिस्थिति में अध्ययन करने वाला विज्ञान है।

समाज मनोविज्ञान की विषय-वस्तु →

समाज मनोविज्ञान से सम्बन्धित विद्वानों द्वारा दिए गये विचारों में इसके विषय-वस्तु को ही व्यक्त किया गया है। सभी परिभाषाओं में विद्वानों ने यह स्वीकार किया है कि इस विज्ञान के अन्तर्गत व्यक्ति के सामाजिक अनुक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। किम्बल यंग ने अन्तःक्रियाओं को तीन भागों में बाँटा है।

(i) एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के साथ सम्बन्ध।

(ii) एक व्यक्ति का समूह के साथ सम्बन्ध।

(iii) एक समूह के साथ दूसरे समूह का सम्बन्ध।

इन अन्तःक्रियाओं के आधार पर व्यक्ति अनेक प्रकार के अनुभवों एवं व्यवहारों

को व्यक्त करता है। जिससे समाज मनोविज्ञान
मनोविज्ञान के अन्तर्गत रखते हैं और मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह भौतिक जगत के साथ-साथ वह सामाजिक जगत में भी रहता है। अतः वह यहाँ व्यक्ति समाज पर निर्भर करता है।

समाज मनोविज्ञान के विषय-वस्तु की व्याख्या करने के लिए निम्नलिखित तीन बातों का वर्णन आवश्यक है।

1 सामाजिक उत्तेजना तथा सामाजिक परिस्थितियाँ व्यक्ति के अनुभूतियों और व्यवहार का अध्ययन करता है व्यक्ति जिस सामाजिक परिस्थितियों में रहता है उन परिस्थितियों पर सामाजिक उत्तेजनाओं का अधिक प्रभाव पड़ता है अतः व्यक्ति के अनुभूति और व्यवहार दोनों पर उसका प्रभाव पड़ता है यहाँ उत्तेजना का अर्थ वातावरण में रहना और व्यक्ति में प्रतिक्रिया उत्पन्न करना होता है। इस सम्बन्ध में ऑलपोर्ट ने अपने अध्ययनों के आधार पर यह बताया है कि ये सामाजिक परिस्थितियाँ तीन प्रकार की होती हैं।

(1) समाज के ऐसे वातावरण जिसके अन्तर्गत व्यक्ति या समाज सामाजिक क्रियाएँ करता है जैसे धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक सामाजिक।

इन सारी बातावरणों से व्यक्ति का समूह निश्चित रूप से प्रभावित होता है

(ii) के मनोवृत्तियों और व्यक्ति के व्यवहार एवं उनके समूहों पर अपना प्रभाव डालते हैं

(iii) इसके अनुसार व्यक्ति के मनोवृत्ति के सोच-परिस्थितियों को व्याख्या आवश्यक है।

(2) सामाजिक उत्तेजना व्यक्ति के व्यवहारों को भिन्न-भिन्न रूपों में प्रभावित करता है कोई भी व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के प्रभावों से प्रभावित होकर ही दूसरे व्यक्तियों से व्यवहार करता है। कोई भी समूह किसी व्यक्ति के अन्दर एवं बाहर दोनों प्रकार के व्यवहारों पर अपना प्रभाव डालता है और उनके सम्बन्धों का भी प्रभाव व्यक्ति पर पड़ता है व्यक्ति के सांस्कृतिक वातावरण का प्रभाव भी उसके अनुभूतियों एवं व्यवहारों पर पड़ता है। अतः सामाजिक उत्तेजक परिस्थितियों को समाज मनोविज्ञान के विषय वस्तु के रूप में प्रमुख रूप से रखा गया है। व्यक्ति के सामाजिक उत्तेजना से उसकी अनुभूतियों एवं व्यवहार प्रभावित होता है क्योंकि व्यक्ति किसी भी समाज का एक प्रमुख अंग है जो किसी न किसी समूह का सदस्य होता है और व्यक्ति जन्म से ही उस समूह के सम्पर्क में रहता है

classmate
Date
Page

व्यक्ति उस सामाजिक समूह के परम्पराओं, रहन-सहन, रीति रिवाज को सीखता है और उसे अपनाता है इसे सीखने के क्रम में व्यक्ति उसके साथ अपना, सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। जिसके आधार पर व्यक्ति में सामाजिक क्रियाओं का विकास होता है और वह विभिन्न समूहों एवं व्यक्तियों से अनेक प्रकार के उत्तेजनाओं को ग्रहण करता है और उसके अनुकूल प्रतिक्रियाएं करता है जिसका प्रभाव उसके अनुभव एवं व्यवहार पर पड़ता है। अतः सामाजिक उत्तेजनाओं से उत्पन्न व्यक्ति की प्रतिक्रियाओं और अनुभूति को समाज मनोविज्ञान का विषय वस्तु माना जाता।

(3) सामाजिक वातावरण का अध्ययन करना समाज मनोविज्ञान का एक महत्वपूर्ण विषय है। व्यक्ति के व्यक्तित्व पर सामाजिक वातावरण का व्यापक प्रभाव पड़ता है। साथ ही साथ व्यक्ति के व्यक्तित्व के ऊपर उसके सांस्कृतिक तत्वों का भी प्रभाव देखने को मिलता है। विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक परम्पराओं और मूल्यों के प्रति व्यक्ति प्रतिक्रियाएं करता है तथा उसे सीखता भी है जो उसके अनुभव में व्यापक परिवर्तन लाता है। इन्हीं परिवर्तनों एवं अनुभवों के द्वारा व्यक्ति में विभिन्न प्रकार के स्थायी गुणों का जन्म होता है। कुछ विद्वानों ने अपने अध्ययनों के आधार पर बतलाया

रहती कि बचपन के संस्कार स्थायी स्वरूप के होते हैं और उन्हीं संस्कारों पर व्यक्ति का पूरा जीवन निर्भर करता है तथा प्रभावित होता है प्राणी का पालन-पोषण जो सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण में होता है उसी के अनुकूल गुणों को, वह अर्जित भी करता है और उसी के अनुरूप अपने को ढालने का प्रयास करता है प्रत्येक समाज का अपना अलग परम्परायें एवं मूल्य होते हैं उन्हीं परम्पराओं एवं मूल्यों के आधार पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है जैसे किसी कलाकार के घर में जन्म लेने वाले बच्चे पर उसी कलाकार का प्रभाव पड़ता है

समाज मनोविज्ञान उन जटिल सामाजिक जीवन के विभिन्न रूपों का भी अध्ययन करता है कि धर्म, संस्कृति, रूढ़ि, जाति, अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना इत्यादि व्यक्ति के व्यवहार को किन रूपों में प्रभावित करता है। अतः व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार की उत्पत्ति का विश्लेषण का एक स्तर सामाजिक-सांस्कृतिक कारक भी है

इस प्रकार समाज मनोविज्ञान के विषयवस्तु के सम्बन्ध में विवरण के रूप में हम कह सकते हैं कि समाज मनोविज्ञान समाज का विस्तृत अध्ययन करता है